

# **NCERT SOLUTIONS**

**CLASS - 11th**



*aglasem.com*

Class : 11th

Subject : Political science

Chapter : 4

Chapter Name : सामाजिक न्याय

Q1 हर व्यक्ति को उसका प्राप्य देने का क्या मतलब है? हर किसी को उसका प्राप्य देने का मतलब समय के साथ-साथ कैसे बदला?

Answer. प्रत्येक व्यक्ति को उसका प्राप्य रूप देने का अर्थ है प्रत्येक व्यक्ति को उसका अधिकार देना। किसी व्यक्ति को वे तमाम चीजें उपलब्ध कराना जिसका वो अधिकारी है। यही स्थिति न्याय है। यह समय के इस रूप में बदला - प्लेटो के समय न्याय का अर्थ ऐसे कार्यों से था जिसमें सबकी भलाई हो। किन्तु आज न्याय का अर्थ केवल यहाँ तक सीमित नहीं है। आज प्रत्येक व्यक्ति की निजता(Privacy) का अधिकार है। अतः हर व्यक्ति अपनी निजता की रक्षा का अधिकारी है।

Page : 66 , Block Name : प्रश्नावली

Q2 अध्याय में उल्लिखित न्याय के तीन सिद्धांतों पर संक्षेप में चर्चा करें। उदाहरण सहित प्रत्येक को समझाइए।

Answer. समान लोगों के प्रति समान बरताव का सिद्धांत- एक व्यक्ति के रूप में कुछ विशेषताओं को साझा करने वाले व्यक्तियों को समान अधिकार प्राप्त होना चाहिए तथा उनके साथ समान व्यवहार होना चाहिए। इसमें लिंग, जाति, नस्ल या रंग के आधार पर भेद-भाव नहीं करना चाहिए। उदाहरण के लिए यदि एक महिला और एक पुरुष दोनों ईंट ढोने का काम करते हैं तो दोनों को समान वेतन मिलना चाहिए। किसी एक को कम या किसी एक को अधिक नहीं मिलना चाहिए।

समानुपातिक न्याय समान व्यवहार न्याय का एकमात्र सिद्धांत नहीं है क्योंकि कुछ परिस्थितियों में समान व्यवहार किए जाने पर कुछ अन्याय हो सकता है। उदाहरण के लिए किसी कक्षा में आयोजित निबंध प्रतियोगिता में सब लोगों एक ही पुरस्कार राशी दी जाय केवल इस आधार पर कि सारे प्रतियोगी एक ही कक्षा के हैं और सबने एक ही काम किया है तो यहाँ ये अन्याय होगा। यँ तो हम समान कार्य के लिए समान दाम की बात करतें है किन्तु यहाँ ये बात महत्वपूर्ण कि निबंध की गुणवत्ता और उसके लिए किये गये परिश्रम की आधार पर पुरस्कार दिया जाना चाहिए बशर्ते निबंध प्रतियोगिता में भाग लेने में किसी प्रकार का भेद-भाव न हुआ हो।

विशेष जरूरतों का विशेष ख्याल यह न्याय का एक तीसरा सिद्धांत है जिसे हम इस रूप में पहचानते हैं कि एक समाज में पुरस्कार या कर्तव्यों का वितरण करते समय लोगों की विशेष आवश्यकताओं को ध्यान में रखना चाहिए। विशेष आवश्यकताओं या दिव्यांग लोगों को कुछ विशेष सम्मान और विशेष मदद के योग्य माना जा सकता है। शारीरिक अक्षमता, उम्र या अच्छी शिक्षा या आधारभूत स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुंच की कमी, कुछ ऐसे कारक हैं जिन्हें कई देशों में विशेष व्यवहार के लिए आधार माना जाता है। उदाहरण के लिए दिव्यांग लोगों या वरिष्ठ नागरिकों के लिए आरक्षण व्यवस्था न्याय के इसी सिद्धांत का आधार लेती है।

Page : 66 , Block Name : प्रश्नावली

Q3 क्या विशेष जरूरतों का सिद्धांत सभी के साथ समान बरताव के सिद्धांत के विरुद्ध है?

Answer. लोगों की विशेष जरूरतों का विशेष ख्याल सिद्धांत के साथ समान बरताव के सिद्धांत का विरोधी नहीं है। वास्तव कुछ लोग किन्हीं महत्वपूर्ण सन्दर्भों में एक-समान नहीं होते ऐसे में उनके साथ विशेष व्यवहार अपेक्षित है। इस रूप में यह सामान बरताव सिद्धांत का ही विस्तार। वस्तुतः समान बरताव सिद्धांत में ही यह निहित है कि जो व्यक्ति किन्हीं विशेष सन्दर्भों में समान हैं उनके साथ अलग तरीके का बरताव किया जाए अर्थात् विशेष बरताव किया जाए।

कई बार विशेष आवश्यकताओं वाले व्यक्तियों को विशेष सहायता देने के लिए इस बात का निर्धारण करना बड़ा कठिन हो जाता कि उनकी किस असमानता को पात्रता दी जाए। शारीरिक अक्षमताओं, उम्र, या बेहतर शिक्षा व स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी को विशेष व्यवहार के योग्य मन जाए। भारत में, अच्छी शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधा, सुविधाओं आदि की कमी को आमतौर पर जाति के आधार पर सामाजिक भेदभाव के साथ जोड़ा जाता है। भारत के संविधान ने समाज में वंचित लोगों के लिए सरकारी नौकरियों और शैक्षणिक संस्थानों में आरक्षण का प्रावधान किया है।

Page : 66 , Block Name : प्रश्नावली

Q4 निष्पक्ष और न्यायपूर्ण वितरण को युक्तिसंगत आधार पर सही ठहराया जा सकता है। रॉल्स ने इस तर्क को आगे बढ़ाने में 'अज्ञानता के आवरण' के विचार का उपयोग किस प्रकार किया।

Answer. जॉन रॉल्स ने निष्पक्ष और न्यायपूर्ण वितरण के लिए 'अज्ञानता के आवरण' का विचार दिया है। रॉल्स का मानना है कि 'अज्ञानता के आवरण' के सिद्धांत से हम निष्पक्ष और न्यायपूर्ण वितरण को तर्कसंगत ठहरा सकते हैं। रॉल्स कहते हैं कि हमें एक ऐसी स्थिति की कल्पना करनी चाहिए जहाँ हमें यह निर्णय लेना है कि समाज को कैसे संगठित करें किया जाए लेकिन इस पर विचार करने से पूर्व रॉल्स की यह शर्त है कि हमें अपनी वर्मन

स्थिति से अज्ञात हों। इसे इस रूप में समझा जा सकता है कि कोई व्यक्ति एक समाज की कल्पना करे जिसमें उसे यह न ज्ञात हो कि उस समाज में उसकी क्या जगह होगी उदाहरण की लिए उसे उसकी जाति, परिवार आदि के बारे में कोई ज्ञान न कि उसकी जाति उच्च है अथवा निम्न उसका परिवार सुविधा संपन्न है कि सुविधा विहीन ऐसी स्थिति में वह ऐसे समाज की कल्पना कर पायेगा जो सबके लिए सुविधाजनक हो और न्यायपूर्ण हो।

राल्स कहते हैं कि कोई व्यक्ति उपर्युक्त स्थिति में जब व्यक्ति को किसी समाज में अपनी जगह का ज्ञान नहीं होगा तब वह सबके लिए बेहतर और न्यायपूर्ण समाज चुनेगा। ऐसा इसलिए कि उसे बराबर यह भय रहेगा कि कहीं उसका जन्म असुविधाजनक परिवार या निम्न जाति में हो गया अतः वह उसके अनुसार भी समाज की कल्पना करेगा कि उसमें उसके हितों की रक्षा हो साथ यह भी कि कहीं उसका जन्म सुविधा जनक स्थिति में हुआ अतः वह इस बारे में भी सोचेगा की सुविधा संपन्न लोगों का अहित न हो। समग्रता में वह एक ऐसे समाज की कल्पना करेगा जहाँ सबको बुनियादी सुविधा मिले।

Page : 66 , Block Name : प्रश्नावली

Q5 आम तौर पर एक स्वस्थ और उत्पादक जीवन जीने के लिए व्यक्ति की न्यूनतम बुनियादी जरूरतें क्या मानी गई हैं? इस न्यूनतम को सुनिश्चित करने में सरकार की क्या जिम्मेदारी है?

Answer. एक स्वस्थ समाज को स्वस्थ और उत्पादक जीवन जीने के लिए बिना किसी भेद भाव के प्रत्येक व्यक्ति की बुनियादी आवश्यकताओं को सुनिश्चित करना चाहिए। चूंकि ऐसा नहीं होने पर एक न्यायपूर्ण समाज नहीं बन पायेगा। किसी व्यक्ति की बुनियादी आवश्यकता के रूप में समान्यतः तीन चीजों का जिक्र होता है - रोटी, कपड़ा, मकान। कोई व्यक्ति चीजों की इर्द-गिर्द अपना जीवन बिता देता है। मनुष्य की अन्य तमाम आवश्यकताएं जिनमें स्वस्थ, शिक्षा और न्यूनतम आय आते हैं इन्हीं तीन चीजों के लिए होती हैं।

इन न्यूनतम आवश्यकताओं को सुनिश्चित करना राज्य की जिम्मेदारी होती है। राज्य को चाहिए कि प्रत्येक नागरिक बिना किसी भेद-भाव के ये सुविधाएँ मुहैया कराए जिससे नागरिक द्वारा अपने चुने हुए लक्ष्यों को प्राप्त के लिए समान अवसर मिले।

Page : 66 , Block Name : प्रश्नावली

Q6 सभी नागरिकों को जीवन की न्यूनतम बुनियादी स्थितियाँ उपलब्ध कराने के लिए राज्य की कार्यवाही को निम्न में से कौन-से तर्क से वाजिब ठहराया जा सकता है?

(क) गरीब और जरूरतमंदों को निशुल्क सेवाएँ देना एक धर्म कार्य के रूप में न्यायोचित है।

(ख) सभी नागरिकों को जीवन का न्यूनतम बुनियादी स्तर उपलब्ध करवाना अवसरों की समानता सुनिश्चित करने का एक तरीका है।

(ग) कुछ लोग प्राकृतिक रूप से आलसी होते हैं और हमें उनके प्रति दयालु होना चाहिए।

(छ) सभी के लिए बुनियादी सुविधाएँ और न्यूनतम जीवन स्तर सुनिश्चित करना साझी मानवता और मानव अधिकारों की स्वीकृति है।

Answer. (द) बुनियादी सुविधाओं को सुनिश्चित करना और सभी के लिए जीवन स्तर का एक न्यूनतम मानक हमारे साझा मानवता और एक मानव अधिकार की मान्यता है।

Page : 66 , Block Name : प्रश्नावली

aglasem.com